International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 469-471

शिवानी की कहानियों में दाम्पत्य संबंधों का विश्लेषण

डॉ० ज्ञानी देवी गुप्ता
सहायक प्रोफेसर, गुरू काशी विश्वविद्यालय, बठिण्डा, पंजाब, भारत।

प्रस्तावना

दम्पति परिवार की धुरी होती है जिससे सभी संबंधियों का जीवन प्रभावित होता है। यद्यपि परिवार के अन्य कार्यों में शिथिलता आ गयी है परंतु परिवार के शारीरिक और अनुरागात्मक कार्य अब पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गये है। अभी परिवार ही ऐसी संस्था है जिसमें समाज द्वारा ऐसे संबंधो को मान्यता दी जाती है जिनके फलस्वरूप बालकों का जन्म होता है और उनका पालन-पोषण होता है। विवाह भी व्यक्ति की कुछ महत्वपूर्ण इच्छाओं को तृप्त करता है। पारिवारिक सम्बंधो की नीवं मौलिक अधिकारों पर टिकी होती है। शिवानी ने इसका उदाहरण देते हुए लिखा है।

'बच्चों को बैठाकर उसने उन्हें तीन केले थमा दिए और स्वयं नीचे उतरकर स्टेशन छोड़ने आई अपनी माँ को, धाराप्रवाह पंजाबी में डाँट-डपटकर समझाने लगी । गाड़ी वहाँ अब और कुछ ही मिनट रूकेगी-सुनकर, वह और भी तेजी से बोलने लगी थी। ''ऐसे काम नहीं चलेगा बीबीजी, तुम जितना दबोगी, तीनों भाई तुम्हें उतना ही दबाएँगे, समझी ? तुम कोई भीख नहीं माँग रही हो, अपना हिस्सा माँग रही हो!''[१]

इसी कटुता-मधुरता को गतिशीलता प्रदान करते हुए पात्रों की मनोदशा का चित्रण करते हुए लिखा है।

''आँवले की चटनी से रोटियाँ खा-खाकर हमने दिन काटे जी, आज कानपुर में लाखों का बिजनेस है। पापाजी नहीं रहे, इसी से वहीं बिजनेस अब बीबीजी की दुश्मन बन गई है । भाईयों में दिन-रात झगड़ा चलता है, बीबीजी बेहद सीधी है और दोनों भाई इन्हीं की सिधाई का फायदा उठाकर पूरी जायदाद हड़पना चाह रहे थे । यही खबर पाकर, मैं कानपुर आई थी । मेरे पति तो इन बातों में कोई दिलचस्पी नहीं लेते ।''[२]

पुरूष और स्त्रियाँ सामाजिक प्राणी है; इन दोनों को एक दूसरे की सहानुभूति और प्रेम की आवश्यकता होती है जिसकी पूर्ति का साधन विवाह बनाया गया है। विवाहित जीवन में आत्म संतोष मिलता है, भावानात्मक सुरक्षाकी भावना और प्रेम से संबंधित इच्छाओं की संतुष्टि होती है और सम्भवतः इसीलिए सामाजिक परिवर्तन लाने वाले तत्व अभी तक परिवार और विवाह की नींव डालते हैं। शिवानी एक सचेत कहानीकार हुई है। शिवानी ने लगभग सभी कहानियों में दाम्पत्य संबंधों की व्याख्या की है। 'उपहार' कहानी में इन संबंधों की समीक्षा नलिनी में माध्यम से करते हुए लिखा हैः-

''सुना, तुम्हारे पति अंग्रेजी स्कूलों के अफसर हैं। यहाँ शिक्षा की उतनी सुविधा नहीं हैं, इसी से अपने पुत्र को उसी सुशीतल नगरी में पढ़ने भेजना चाहती हूँ, जहाँ मैनें पढ़ा है। परसों पहुँच रही हूँ। जैसे भी हो, अपने पति से कहकर सेंट जोसेफ में एक सीट मेरे पुत्र को दिलवानी होगी। ('मेरा पुत्र' सुनकर चौंक गई क्या? जैसे कठोर शिलाखण्ड तोड़-फोड़कर तुम्हारे पहाड़ी मीठे झरने फूट निकलते है, ऐसे ही चालीस वर्ष के वज्र कठोर शिलाखण्ड को तोड़ता-फोड़ता एक बहुत मीठा झरना मेरे प्रांगण में भी आ गया है, नाम है प्रिंस)।[३] शिवानी ने दाम्पत्य संबंधों की प्रगाढ़ता को खण्डित होना पारिवारिक विघटन का कारण माना है । नलिनी तथा उसके पति के मध्य संबंधों की कटुता से परिवार के बिखराव को इस प्रकार दिखाया हैः-

पति से उसकी सामान्य बोलचाल और भी कम हो गई और फिर दाम्पत्य जीवन के उस घुटन भरे वातावरण से विधाता ने उसे स्वंय ही क्षणिक मुक्ति दिला दी ˙ पति को विदेश जाना पड़ा और भाग्य ने शायद ही विस्मृत उसके प्रेमी के आह्वान के साथ गुप्त मंत्रणा कर बम्बई बुला लिया। अपनी उसी यात्रा के बीच, वह मार्ग के उस अपरिचित स्टेशन पर निश्चिन्त होकर उतर सकती थी । उतनी दूर ने उसे आत्मीयता स्वजनों की सन्धान दृष्टि का घेरा बाँध सकता था, न क्रोधी शक्की पति का और यदि कोई मिल भी गया, तो वह यह कहकर उसे घिस्सा दे सकती थी कि वह अपने ननिहाल के पूर्वपरिचित फैमिली डॉक्टर को देखने निकल पड़ी है।[४]

प्रेम के आवेग के वश में होकर प्रेमी और प्रेमिका विवाह कर लेते है। इसका कारण माता-पिता का कम नियंत्रण और बढ़ते हुए जनतंत्रात्मक विचार है। स्त्रियां अब सामाजिक क्षेत्र में, शिक्षा और आर्थिक क्षेत्र में बहुत अधिक दिखायी देने लगी है। इसका कारण है कि मित्रता के अवसर बहुत उपलब्ध है, धार्मिक बंधन ढ़ीले होते जा रहे है और यह भावना बढ़ रही है कि विवाह में पुरूष और स्त्री की इच्छा ही मुख्य होनीचाहिए। वास्तव में प्रेम विवाहों का मुख्य कारण स्त्री और पुरूष दोनों की समानता हैं क्योंकि उनको मिलने और मित्रता बनाये रखने के बहुत से अवसर प्राप्त होते है। ऐसे विवाह जिनका आधार केवल प्रेमस्वपनदर्शन तथा प्रेम का आवेग रहा हो तथा जिनमें धन-सम्पति,स्त्री पुरूष के सामाजिक स्थान, सांस्कृतिक विभिन्नताओं तथा माता-पिता की निषेधात्मक बातों का कोई ध्यान न रखा गया हो प्रायः असफल होते है और बाद में समस्या के रूप में सामने आते हैं। ऐसे पति और पत्नी जो विवाह को केवल प्रेम और आवश्यकताओं-इच्छाओं की पूर्ति का साधन मात्र समझते है, कुछ समय के बाद यह महसूस करने लगते है उनके संबंधो में कुछ गड़बड़ी है, विवाह पूरी इकाई के रूप में कार्य नहीं कर पा रहा है । बहुत सम्भव है कि इस कमी को दूर करने का केवल एक ही रास्ता उन्हें दिखायी दे जो प्रायः होता है नये साथी की खोज करना । इसके विपरीत विवाह एक बहुत ही गंभीर संबंध है, यह केवल प्रेम के नशे में किया जाने वाला कार्य नहीं है। कुछ समय बाद

व्यक्ति यह मानने लगता है कि दुर्भाग्यवश उन्होनें पहले गलत चुनाव कर लिया था और इस गल्ती को ठीक करने के लिए दुबारा चुनाव किया जाना चाहिए, तभी प्रेम का आनन्द उठाया जा सकेगा। प्रत्युत्तर पाने की यह भावना प्रेम की मूलप्रवृति से संबंधित है। शिवानी के 'उपहार' कहानी के माध्यम से उदात्त एवं वासनात्मक प्रेम भावना की मिश्रित अभिव्यक्ति की है। उदात्त प्रेम भावना का उदाहरण देखिए :-

''प्रिंस देखने में एकदम छोटा रघुनाथ लग रहा था, गोल मुँह और निर्दोष गठन। उसके पिता के इसी व्यक्तित्व पर रीझकर तो उसकी माँ ने लाखों की सम्पति स्वेच्छा से ही ठुकरा दी थी। अनाथ नलिनी को उसकी लखपती बुआ ने ही पाला था, उनसे मैं कई बार मिल चुकी थी। स्पष्ट मूँछो और गलमुच्छोंवाली उसकी डरावनी मर्दावनी बुआ, बुआ कम और फूफा ही अधिक लगती थी । वे नलिनी को बड़े लाड़ से रखती थीं, पर उनके शासन का अंकुश कभी-कभी बड़ी क्रूरता से कोंचता था । डॉक्टरी पढ़, नलिनी बुआ के साथ अफ्रीका जाकर अपनी स्वतंत्र प्रैक्टिस आरंभ कर देगी, साथ ही उनके सिल्क के कारोबार की देख-रेख में भी योगदान देगी, यही बुआ की पूर्वनिर्धारित योजना थी पर इसी में दाल-भात में मूसरचन्द बन, टूटी कोहनी जुड़वाने सुदर्शन रघुनाथ मेडिकल कॉलेज में न जाने कहाँ से टपक पड़ा ? टूटी हड्डी के साथ-साथ विभिन्न प्रांतों के दो सर्वथा विरोधी स्वभाव के हृदय भी अनजाने में न जाने कब जुड़ गए ? बुआ ने सुना, तो सिर पीट लिया। पहले अपनी मूँछे नोंची, फूफाजी से लड़ीं, फिर ताबड़तोड़ उड़कर भारत भाग आई।[५]

यद्यपि यह कहा जाता है कि उन पुरूषों का विवाहित जीवन कम सफल होता है जिनके बच्चे नहीं होते परंतु कभी-कभी बच्चे भी परिवार के संघर्ष का कारण बन जाते है । अनुशासन, शिक्षा के प्रकार और सामाजिक क्रिया-कलापों के संबंध में मतभेद हो सकता है। उस समय पिता को अपने पुत्र से ईर्ष्या होने लगती है जब परिवार में पत्नी पति की ओर कम ध्यान देकर पुत्र की ओर अधिक ध्यान देने लगती है। इसी प्रकार यदि पति अपनी पत्नी के प्रति उदासीनता दिखा कर पुत्री के प्रति अधिक आकर्षित रहता है तो पत्नी में भी ईर्ष्या की भावना आ जाती है। 'मैं मन-ही-मन बौखला उठी। इला अभी से ही इतनी सुन्दर थी फिर भविष्य की उस सुलक्षणा स्वयंदूती के एक-एक लक्षण मुझे सहमाने लगे थे। बचपन से ही ऐसी पकी बातें सुनकर क्या यह संभव नहीं था कि पाल में पकाए गए पपीते की भाँति मेरा अबोध पुत्र भी अकाल-परिपक्व हो उठे? अतुल को अपनी सगी चचेरी बहन से कोई लगाव नहीं था, किंतु इला के बिना उसका एक पल भी जैसे सार्थक नहीं रहता। एक तो वह दुःसाहसी दस्युकन्या, पेड़ पर जंगली बिल्ली की ही फुर्ती से चढ़ सकती थी उसके मित्रों के साथ क्रिकेट खेलती थी। लड़को के प्रत्येक खेल में उसकी रूचि थी और लड़कियों के खेल से थी घोर अरूचि। ह्वील चेयर पर अवश बैठी मालिनी भाभी की बेटी अंजना, अपनी सुंदर गुड़िया का उत्कोच देने पर भी जिसे अपनी सहेली नहीं बना पाई थी, वह मेरे बेटे की अंतरंग बाल्यसहचरी बन उठी थी।[६]

पारिवारिक संदर्भ में मूलरूप से मां, पुत्री के मार्मिक संबंधो की प्रगाढ़ता देखी जाती है क्योंकि जितनी आत्मीयता इन सबंधों में होती है। उतनी अन्य संबंधों में नहीं। इसी प्रकार भाई-बहन का उदात् प्रेम जीवन संचालन की सक्रियता को सार्थक बना देता है। इन पवित्र संबंधो की सूक्ष्माभिव्यक्ति शिवानी की कहानियों में देखी जा सकती है।

माँ, पुत्री एवं भाई-बहन के पवित्र संबंधों का लगभग प्रत्येक कहानी में शिवानी ने चित्रण किया है। कृपण पिता के प्रति खिन्न होकर माँ की उदासी बिन्दु से छिप नहीं पाई।

''बिन्दु की आँखों से नींद उड़ गई थी। कभी देखती अम्मा का उदास चेहरा- क्या सुख देखा बेचारी रे ! कृपण बाबूजी ने कभी एक धेला भी तो नहीं धरा उसके हाथ में ! बड़ी दी, मँझी दी और सँझली दी अपनी ससुरालों से आती, तो अम्मा बेचारी ने जाने कहाँ-कहाँ से माँग-तूँगकर उनकी विदा का सामान जुटाती। हर त्यौहार में बहने अपनी ससुराल के लिए लूट-खसोट की सामग्री जुटाने आ धमकती। कभी हरेला, कभी दशहरा, कभी रक्षाबंधन । कुँआरी दो छोटी बहनें -इन्दु और बिन्दु-भुनभुनाती रहतीं ।

''क्या जानती नहीं ये कि अम्मा के पास कुछ भी नहीं धरा है?''[७]

भारतीय नारी निष्ठा का केन्द्र बिंदु रहा है परंतु कुछ संबंध सुखमय विस्तार पाने के लिए सहायक माने जाते है जिनमें लज्जा की मर्यादा भंग हो सकती है देवर-भाभी और जीजा-साली का संबंध भारतीय संस्कृति में अंतरंगता को बढ़ाने के लिए स्थापित किए गए है। दमित वासना, कुण्ठा, तनाव, अतृप्त इच्छा आदि मनावृतियों के शमन के लिए कहानीकार शिवानी ने इन संबंधों का आयोजन किया है। शिवानी ने ''शायद'' कहानी के माध्यम से परिवार के विभिन्न सम्बन्धों के साथ-साथ देवर की मृत्यु पर भाभी की सवेंदना की मार्मिक अभिव्यक्ति करते हुए लिखा है।

मौसरी बहन का जवान देवर, पन्द्रह दिन में इसी भयानक रोग में तड़प-तड़प कर चल बसा था और गढ़वालवाली मामी की बहन सरोज दी। वह बेचारी तो बारह दिन में बीमार हो नहीं रही। सोचने या रोने-धोने का समय था ही कहां! सबसे पहले तो अपने ही सनातन परिवार के अनुशासन के असंख्य 'हर्डल' लाघंने होंगे। कहीं भी जाना हो, पहले पितामह,फिर पिता,अम्मा,बुआ-एक-एक से विभिन्न पासपोर्ट,वीसा बनवाने पड़ेंगे। कहां जाना है? क्यों जाना है? क्या जाना जरुरी है? ठीक है, जाना ही है, तो बड़ी दी की लड़की को साथ लेती जाओ या बुआ को-आदि-आदि। पर बड़ी बहन की लड़की या बुआ दोनों में से किसी को साथ ले जाना अपने पैरों में स्वयं कुल्हाड़ी मारना था। बारह वर्ष की बहनौती सुमन के मस्तिष्क में नई-नई कल्पनाएं सदा जंगली हिरनी-सी कुलाँचे भरती रहतीं। जो घटनाएं कभी घट ही नहीं सकती थीं, उन्हें वह दिन रात घटाती इधर-उधर बघारती फिरती। बारह वर्ष के शरीर में चौबीस वर्ष का परिपक्व-उर्वर मस्तिष्क लिए, हमारे चारों ओर चील-सी मंडराती सुमन को पहले यथेष्ट उत्कोच से हमने दूर खदेड़ दिया, छोटी बुआ को नियति स्वयं बड़े तड़के बिच्छू बनकर डँस गई। अगूंठा पकड़कर वह कमरे में अलग बिसूर रही थी। पति के माता-पिता सदैव इस भावना से प्रेरित रहते है कि उनके बेटे और बहू का जीवन सुखी हो और इसी कारण वे साधारण मामलों में भी अपना फैसला देते रहते है । हो सकता है कि वे परिवार के हित के लिए कहते हो कि बहू अधिक खर्चीली है या उसको बच्चों की देखभाल करनी नहीं आती। उनके द्वारा समय-असमय की जाने वाली आलोचना विवाहित जीवन पर वज्रपात कर सकती है। सास-बहु, देवरानी-जेठानी के पारस्परिक सम्बन्धों की कटुता ही विख्यात

रही है। परन्तु 'चीलगाड़ी' कहानी में प्रतिकूल परिस्थितियों में इनके मधुर सम्बन्धो की संवेदना को वाणी दी है। बड़ी अम्मा प्रायः मेरे पास ही बैठी रहती। तेरहवीं के पश्चात्, उन्होनें मेरा पक्ष लेकर पुत्र-शोक से जर्जरित मेरे श्वसुर के सम्मुख मेरी शिक्षा को पुर्नवीभूत करने का प्रस्ताव रखा था। मुझे छोटी ननद के साथ कालेज जाने की अनुमति मिली तो मेरी दोनों जिठानियां कुढ़कर रह गई थीं। ''पर लग गए हैं। छोटी के, अब देखों कब उड़ती है,'' मँझली दिज्यू ने हसंकर कहा था। कैसी विचित्र भविष्यवाणी थी।[८]

पारिवारिक संबंधों मे माधुर्य भाव जीवन को सुचारू बना देता है। माधुर्य चाहे दांपत्य संबंधों में हो या अन्य संबंधों में। पारिवारिक व्यवस्था के लिए अनिवार्य है मधुरता की चरम सीमा इस धरा पर स्वर्ग के समान है। परंतु यह चरम सीमा किसी भी नए सदस्य के प्रवेश से खण्डित हो सकती है ओर यहीं से संयुक्त परिवार का विखण्डन शुरू हो जाता है परिवार के मुखिया का तिरस्कार, आत्मकेन्द्रित भावना निजि स्वार्थपूर्ति आदि भाव मधुरता के लिए घातक मानी जाती है। शिवानी की कहानियां एक ओर परंपरागत जीवन पारिवारिक मूल्यों को संबंधों के लिए अनिवार्य मानकर लिखी गई है तो दूसरी ओर पाश्चात्य प्रभाव के कारण खंडित मानसिकता को भी दर्शाती है। पहली कुछ मुलाकातों में जब दोनों पक्ष अच्छे से अच्छे व्यवहार करने का प्रयत्न करते है तो दोनों का स्वभाव स्पष्ट रूप से सामने नही आ पाता। आवश्यकता से अधिक आलोचना करने वाली निराशावादी पत्नी एक खुशमिजाज और चिंताहीन व्यक्ति के जीवन को मरूभूमि की भांति तपा सकती है और समस्यारूप हो सकती है। यदि दोनों में से एक को अधिक गुस्सा आता है तो दूसरें को गुस्सा नहीं आता है तो भी यह समस्या हो सकती है कि उस शांतिप्रिय व्यक्ति के लिए क्या किया जाए। यद्यपि विवाह और प्रेम एक बंधन होता है परंतु फिर भी कुछ व्यवहार एक को नापंसद हो सकते है और ये व्यवहार ही छोटे-मोटे झगड़े का रूप धारण करने के बाद जीवन के लिए समस्या बन जाते है।

निष्कर्ष

कहानीकार शिवानी का मत है कि परिवार के अनुरागात्मक कार्य का सार केवल भावुक प्रेम है। ऐसे लोग सिनेमा तथा इस प्रकार की उत्तेजक पुस्तकों से प्रभावित होकर विवाह करते है। परंतु यदि आदमी को समाज का एक सामान्य सदस्य बने रहना है तो यह आवश्यक है कि विवाह से उत्पन्न होने वाले संबंधों को वह ठीक रखें। इस प्रकार विवाह से कामवासना की पूर्ति तो होती ही है, साथ-ही-साथ सहानुभूति और प्रेम की प्राप्ति होती है, जिसका कोई अंदाजा विवाह से पहले प्रेमी नहीं लगा पाता परिवार में प्रेम-संबंधी कृत्यों का आधार व्यक्ति की प्रत्युतर पाने की इच्छा है।

संदर्भ

1. शिवानी चिरस्वयंवरा पृ० सं० २६
2. शिवानी चिरस्वयंवरा पृ० सं० ३१
3. शिवानी : चिरस्वयंवरा : 'उपहार' पृ० ८
4. शिवानी : चिरस्वयंवरा : 'केया' पृ० २६
5. शिवानी 'उपहार' : पृ० ६
6. शिवानी विप्रलब्धा 'दो स्मृति चिन्ह' पृ० सं० १६
7. शिवानी विप्रलब्धा 'शपथ' पृ० सं० ८२
8. शिवानी चिरस्वयंवरा 'चीलगाडी' पृ० सं० ५८